Dr. Madan Paswan
Assistant Professor, Dept. of History,
J. N. College, Jaynagar, Madhubani.

Lecture No. 38.
April 22, 2020

Class: B.A. Part-I (Hons.) Paper-Ist
Topic :- भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ.

मध्य पाषाण कालीन जीवन : भारत वर्ष में मध्य पाषाणकालीन मनुष्य छोटी-छोटी पहाड़ियों पर रहता था। वह कृषि कार्य और पशुपालन से अनभिज्ञ था। उसका प्रमुख उद्यम आखेट था। वह गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ा, मछली और घड़ियाल आदि से परिचित था। आखेट में मारे गये पशु-पक्षियों के मांस और झीलों तथा नदियों के तटों पर पकड़ी गई मछलियों के अतिरिक्त वन में उत्पन्न फल-फूल और कंद मूल भी पेट पालन के साधन थे।

महादहा के उत्खनन में हड्डी के बने उपकरण तथा आभूषण प्राप्त हुए हैं। यहाँ भी कब्रें प्राप्त हुए हैं। सराय-नाहरराय के समान यहाँ के कंकालों के आकार काफी बड़े हैं। एक पुरुष कंकाल की लम्बाई 1.92 मीटर और स्त्री की 1.78 मीटर है।

विंध्य क्षेत्र में बेलन नदी घाटी में भी मध्यपाषाण काल के कई स्थलों का पता-चला है। इनमें चोपनीमाण्डो के उत्खनन से उस युग के मानव के संबंध में नई जानकारी प्राप्त हुई है। यहाँ गोल आकार की झोपड़ियों के अवशेष मिले हैं। इन्हें गोलाई में खम्भे गाड़कर घास के टट्टर से घेर दिया जाता था। उत्खनन से पता-चलता है कि बहुत-सी झोपड़ियों को पास-पास बनाई गई थी। इस आधार पर यह अनुमान किया गया है कि बस्ती का बसना शुरू हो रहा था। इस स्थान से जंगली-चावल के दाने भी मिले हैं।

उत्तर या नवपाषाण काल (Neolithic Age):

नवपाषाण (Neolithic) शब्द का प्रयोग सबसे पहले सर जॉन लुबॉक ने अपनी पुस्तक 'प्रिहिस्टोरिक टाइम्स' में किया था। जो सर्वप्रथम 1865 में प्रकाशित हुआ। मध्यपाषाण काल के पश्चात् उत्तरपाषाण काल (Neolithic Age) का प्रारम्भ ई० पू० 6000 के लगभग हुआ। इस काल की एकमात्र बस्ती मेहरगढ़ ऐसी है, जिसका समय 7000 ई० पू० बताया जाता है। यह सिंध और बलूचिस्तान की सीमा पर कच्छ के मैदान में बोलन नदी के तट पर स्थित है। उत्तर-पाषाणकालीन सभ्यता भारतवर्ष के विशाल भू-प्रदेश में विस्तृत थी। तत्कालीन सामग्री कश्मीर, सिन्धु-प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में प्राप्त हुई है।

जिस प्रकार पूर्व पाषाणकालीन सामग्री प्रमुखतया क्वार्टजाइट की है और मध्य पाषाण कालीन सामग्री कैल्सेडोनी, जैस्पर, चर्ट और ब्लड स्टोन की, उसी प्रकार उत्तर पाषाणकालीन सामग्री प्रधानतः गहरे हरे ट्रैप की

है। सर्वप्रथम हथियारों पर पॉलिश करने की परंपरा का विकास उत्तरपाषाण काल में हुआ। उत्तर पाषाणकालीन हथियारों-औजारों पर या तो सम्पूर्ण भाग पर पॉलिश है या कम से कम ऊपर और नीचे के सीरों पर। इससमय के जो हथियार और औजार मिले हैं, उनमें —

(क) सेल्ट,
(ख) कुल्हाड़ी,
(ग) एड्ज,
(घ) स्लिक स्टोन
(ङ) फैब्रिकेटर पॉलिशर,
(च) हैमरस्टोन।

सर्वप्रथम 1860 ई० में H. B. Le. Mesaria ने उत्तर प्रदेश के टौंस नदी की घाटी में उत्तर पाषाणकालीन पॉलिशदार सेल्ट प्राप्त किये। नवपाषाण काल में मनुष्य ने खेती करना आरम्भ कर दिया था। वह पशुपालन भी करने लगे। उसने इस काल में पत्थर को घिसकर चिकने औजार बनाये। इसके अतिरिक्त वह मिट्टी के बर्तन भी बनाने लगा था। सच पूछा जाये तो मिट्टी के बर्तन छोड़कर नवपाषाण काल की अन्य विशेषताएँ बीज रूप से मध्यपाषाण युग में ही दिखाई देने लगती हैं। उनका विश्वास नवपाषाण काल में हुआ। परन्तु नवपाषाण काल की सभी विशेषताएँ इस काल के सभी स्थानों पर समान रूप से नहीं दिखाई देतीं। कहीं मिट्टी के बर्तन नहीं मिलते, तो कहीं पत्थर के चिकने औजार नहीं हैं। इसीलिए नवपाषाण काल का मुख्य लक्षण एक स्थान पर स्थायी निवास ही कहा जा सकता है, जो खेती और पशुपालन के कारण आरम्भ हुआ। नवपाषाण युग के अवशेष जिन स्थानों पर मिले हैं, उनको हम निम्न अधोलिखित उपशीर्षकों के अन्तर्गत रख सकते हैं — (क) बलूचिस्तान:- पाकिस्तान के ईरान की सीमा से लगे बलूचिस्तान क्षेत्र में कई स्थानों से नवपाषाण युग से ताम्राश्म युग तक के विकास का अच्छा परिचय मिलता है। (ख) सिन्धु का मैदान:- खेती का ज्ञान प्राप्त करने के बाद मनुष्य ने सिंधु के विशाल मैदान में रहना आरम्भ किया। इस क्षेत्र में नवपाषाण काल की अनेक बस्तियों का पता चला है। इनमें मेहरगढ़ के उत्खनन ने सिंधु के मैदान में रहने वाले मानव के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान होता है।

(ग) विंध्य और गंगा का मैदान :- मध्यपाषाण काल में ही विंध्य क्षेत्र में निवास करने वाले मानव का विस्तार गंगा के मैदान में हो गया था। निरंतर विकास की ओर अग्रसर होते हुए उसने नवपाषाण काल में प्रवेश किया। महादहा तथा पंचोट से केवल नव पाषाणकालीन अवशेष ही प्राप्त हुए हैं। महादहा में झोपड़ियों का निर्माण दो या तीन के समूह में किया गया था।

— Dr. Madan Paswan, History, 22.04.2020